

मृणाल पाण्डे की कहानियों में ग्रामीण परिवेश (नारी मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में)

प्रा.डॉ. संतोष भिका तमखाने

हिन्दी विभाग

श.ता. एज्युकेशनल सोसा. अँड को-ऑप. एज्युकेशनल सोसायटी लि. संचालित,
सिनिअर आर्ट्स महिला महाविद्यालय शहादा. जि. नंदुरबार

समाज मानव द्वारा निर्मित एक ऐसी संस्था है, जिसके माध्यम से वह अपने विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करता है। सामाजिक जीवन में परिवार, शिक्षा, जात-पात, छुआछूत, अंधविश्वास, शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और परंपरागत रूढ़ियों का मनुष्य जीवन पर काफी असर होता है। मनुष्य जीवन ग्रामीण और शहरी इन दो भागों में बाँटा जा सकता है।

यदि भारतवर्ष को उसकी संपूर्णता में देखना और परखना है तो उसे इस देश के गाँवों में जाना होगा, क्योंकि भारतवर्ष गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकांश जनता गाँवों में ही वास करती है। इतना ही नहीं, शहरों के विकृत विस्तार के साथ एक शहर में भी कई-कई गाँव बस गये हैं। जब हम यहाँ गाँव अथवा ग्रामबोध की बात कर रहे हैं तब हमें गाँव के स्वरूप को बड़ी स्पष्टता के साथ चित्र में रखकर चलना होगा। जैसे तो गाँव अपने आप में एक अमूर्त संस्था है, लेकिन गाँव के सामाजिक सरोकार, गाँव की विविध आर्थिक समस्याएँ, गाँव के राजनीतिक-सांस्कृतिक परिदृश्य ही उसे मूर्तित आकारित करती है। चूँकि कहानी जीवन के पीछे-पीछे चलती है, उसमें जीवन का यथार्थ रूप अभिव्यक्त होता है, अतः कहानी साहित्य, समय और समाज को उसकी समग्रता और वास्तविकता में ही पकड़ने का उपक्रम करता है। इस उपक्रम को मूर्तिमान करने में अनेक कहानीकारों ने अपना साहित्यिक योगदान दिया है। चाहे शहर का समाज हो या गाँव का समाज, कोई भी रचनाकार समाज की संवेदनाओं-समस्याओं को अतिक्रान्त करके साहित्य की सर्जना नहीं कर सकता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी के कुछ कथाकारों की कहानियों के केंद्र में गाँव और किसान प्रमुख रूप से रहे हैं। आज भूमण्डलीकरण, औद्योगीकरण और बाजारवाद ने किसानों की स्थिति को बहुत दयनीय बना दिया है। गाँवों को अनेक कुप्रथाओं और रूढ़ियों ने बड़ा विकृत, विद्रुप कर रखा है। पर्दाप्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह, दहेजप्रथा, वर्णव्यवस्था, जातिप्रथा, भेदभाव, छुआछूत आदि ऐसी ही विकृतियाँ हैं।

आज नारी की स्थिति शोचनीय हो चली है, इस शोचनीय स्थिति के नये आयामों को नारी अपने सम्मुख पा रही है। औद्योगिक क्रांति, सूचना क्रांति एवं बाजारवाद ने शहरी नारी के सामने नई चुनौतियों को रखा है तो ग्रामीण नारी भी उससे अछूती नहीं रह सकी है। इसमें दो मत नहीं कि आज शिक्षित कामकाजी आधुनिक नारी विभिन्न सामाजिक संबंधों का निर्वाह करने पर घर और बाहर की समस्याओं में सामंजस्य बिठाने के प्रयास में शारीरिक, भावनात्मक तथा आर्थिक रूप से शोषित हो रही है तो ग्रामीण क्षेत्र में दिन-रात शारीरिक श्रम करते हुए अपने घर संसार की व्यवस्था सुधारने में लगी अशिक्षित नारी शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण की त्रासदी को झेल रही है। ग्रामीण महिला जिसे की खाना पकाना, पानी लाना, ईंधन बटोरना, खेतों तक भोजन पहुँचाना आदि कार्य उनके जिम्मे होते हैं। मृणाल पाण्डे की कहानियों में ग्रामीण परिवेश का चित्रण दृष्टिगत होता है।

'चार दिन की जवानी तेरी' संग्रह की 'मुन्नूचा की अजीब कहानी' में ग्रामीण परिवेश की नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। उदा. "गाँव की अनब्याही लड़कियों पर ये सब ठाठ इंतजाम देख के हँसी के दौर जैसे पड़ने लगे थे। "सुना विलायत में नित्यकर्म करके अंग को खुशबूदार कागज से पोंछा लेते हैं जी।" खिन्न करके एकाध नजर सब लड़कियाँ मुन्नूचा के कमरे की ओर भी डाल रही थी। बड़ी औरते ऊपर से कोप करके भी, पल्ला मुँह पर रख हँसने वाली हुई। बड़ा आसामी ठहरा मुन्नू। जाने अल्लादीन के चिराग जैसे सुटकेस से कैसे क्या मिल जाए ?" 1

मुन्नूचा विलायत से गाँव आता है। गाँव में वह गाँव का पानी नहीं पिता वह प्लास्टिक की बोतले साथ लाया था। इस संदर्भ में कहानी की बसंती बुआ कहती है, "पहाड़ का पानी कहाँ रह गया अब पहले जैसा ? जिसके लिए पहाड़िए देस में बैठे तरसा करते थे। पियों तो पेशि हो जाये। आँत का बुखार हो जाये ऐसा हो गया है। मुन्नूचा जैसे इंग्लिश टाईप जंटलमैन अब पहाड़ आये तो अपने पीने का महंगा शुद्ध जल मैदान से अलग लाने वाले हुए। यहाँ तो पेट चल गया। तो डॉक्टर, ढंग का संडास भी नहीं ठहरा।"2

ग्रामीण नारी मनोविज्ञान का चित्रण 'चार दिन की जवानी तेरी' कहानी संग्रह की कहानी 'लड़कियों' में भी मिलता है। कहानी में लली अपने तीन बेटियों को लेकर अपनी माँ के घर प्रसूति हेतु आती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी महिलाएँ बेटी की तुलना में बेटे को महत्व देती हैं। लली को पहले ही तीन बेटियाँ हैं। गाँव में लली की माँ की माँ को अबकी बार लड़के का जन्म हो यह अपेक्षा होती

है। इस संदर्भ में लली की माँ और पडोसन नानी लड़के के जन्म को लेकर चर्चा करते हैं, "लली की माँ, इस बार तो लली को लड़का ही होगा, चेहरा देखो, कैसा पीला पड़ गया है लली का, लड़कियों की बेर कैसी सुख गुलाब लगती थी।" क्या पता, इस बार भी।"3

ग्रामीण क्षेत्रों में लड़का होने पर दाई को उपहार के रूप में कुछ न कुछ दिया जाता है। 'लड़कियाँ' कहानी में दाई का मनोवैज्ञानिक चित्रण इन शब्दों में मिलता है- "तुलसा दाइ माँ के तलवों में तेल ठोंक रही है, और कह रही है, "इस बार लड़का होगा तो स्टेलेनेस स्टील की जरी वाली साड़ी लूँगी हों।"4

अधिकतर खेती ग्रामीण क्षेत्रों में की जाती है। गाँवों में खेती का विशेषज्ञ महत्व होता है। 'बीज' कहानी में संयुक्त राष्ट्र संघ का जपानी, अमरीकी खाद्यान्न विशेष पहुँचते हैं। बंजर जमीन को उपजाऊ कैसे की जा सकती है तथा विदेशी बीज बोने से फसल अच्छी कैसे आती है इस संदर्भ में जानकारी देते हैं। किन्तु आगे जब विदेशी बीज बोने के कारण फसल अच्छी नहीं होती तो एक वृद्धा नारी अपनी व्यथा इन शब्दों में व्यक्त करती है, "जितना बोया तुम्हारा फिरी का बीज, उसमें बाली भी नहीं पड़ी सारी मेहनत फालतू गई कि नहीं? फिरी का सोयाबीन बोया तो वो भी नहीं उगा। अपनी फसल बोने का समय निकल गया ऊपर से इस दैल-फैल में। हमारे खेत जो बंजर रह गए, उनको हम चाटे क्या? तभी तो हमने हर्जाना माँगा। अरे, अपना देसी धान का बीज बोते तो, इससे अच्छे ही रहते। देवी की सौ।"5 प्रस्तुत कहानी में वृद्धा नारी की मनोदशा का चित्रण मिलता है।

'बचुली चौकिदारिन की कढ़ी' कहानी में भी पहाड़ी क्षेत्र में, गाँव में एक स्कूल में चौकिदारिन का काम करने वाली नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। नारी जीवन में मातृत्व विशेष रूप से महत्व रखता है। चौकिदारिन अपने पोते का ख्याल एक माँ की तरह रखती है। उसका पोता जब बीमार हो जाता है तो वह अस्वस्थ हो जाती है। पोते को खिलाने के लिए कढ़ी भात लाते समय जब वह गिर जाती है तो वह स्वयं भूखी रहकर अपने हिस्से की कढ़ी भात पोते को खिला देती है।

मृणाल पाण्डे की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र की नारी का मनोविश्लेषण करती है। इस संदर्भ में अर्चना शुक्ला लिखती है, "मृणाल पाण्डे की अधिकांश कहानियाँ पहाड़ी जीवन की व्यथा-कथा को दर्शाती हैं। समाज से जुड़े भावबोध को व्याख्यायित करने में लेखिका को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। नारी जीवन की विवशता और उसके अंतर्द्वन्द्व को भी इन कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली है।"6

ग्रामीण महिलाओं में अक्सर अंधविश्वास पाया जाता है। पहाड़ी दूर दराज के क्षेत्रों में महिलाएँ बीमारी को दूर करने के लिए अस्पताल न जाकर घर पर ही ईलाज करवाती हैं। 'समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर' कहानी की नायिका जब अपने समय की नर्तकी से मिलने पहाड़ पर जाती है तो उसकी अवस्था देखकर हैरान हो जाती है। नर्तकी अब वृद्ध हो चुकी है और अपने पति के मृत्यु के पश्चात अकेली रहती है। कहानी की नायिका कहती है, "वृद्ध नर्तकी पर बेशुमार नगीने और धातुएँ गुँथी हुई हैं... हीरा, माणिक, धोती, लहसुनिया, मूंगा, सोना, चांदी, तांबा, लोहा मूंगा मंगल के लिए होता है, लहसुनिया राहू के लिए, मोती चंद्रमा के लिए, माणिक सूर्य के लिए, लोहा शांति के लिए, तांबा गठिया की तकलीफों के निवारक ग्रहों के लिए उनकी उंगलिया, उनका निजी सौरभमण्डल रचती है। उनका रहस्यमय नक्षत्र लोक जहाँ अपनी जड़ाऊ उंगलियों की रहस्यमय शक्तियों से अपने ग्रह नक्षत्रों को कुम्भैत छोड़ों की तरह बस में किए हुए वे समुद्र सतह से दो हजार मीटर ऊपर अकेली सब शत्रुओं के विरुद्ध खड़ी है।"7 अतः अंधविश्वास के कारण वह दुर्लभ नगों के लिए पैसे बरबाद करती है।

विधवा नन्द के प्रति भाभी के मन में चलने वाले कुत्सित विचारों का चित्रण 'हमसफर' कहानी में मिलता है। विधवा निर्मला मायके में कुछ दिन बिताने के बाद जब ससुराल जाती है तो उसकी भाभी गिनकर केवल छः पुरियाँ देती है। वह सोचती है, "भूख लगती है, मुन्ना बगल में सटकर फुसफुसायाँ उसने डलिया से अखबार में लपटे चार पुरियाँ उसे थमा दीं। पुरियाँ भी गिनकर धरी गयी थी कुल छह। अब इतना घी तेल भी तो "तुम खाओगी?" मुन्ना पूछ रहा था। उसने सिर हिला दिया पुरियाँ कुल छह थीं। और सुबह तक का सफर था। मुन्ना खाता रहा वह स्निग्ध भाव से ताकती रही। सफर में वैसे भी कम खाना अच्छा होता है कि नहीं? गाडी तो अब छूटती होगी। एक बार चली नहीं कि नींद आ जाएगी बस।"8 भाभी का इतना कटुतापूर्ण व्यवहार के बावजूद भी निर्मला भाभी के प्रति मधुरता बनाए रखती है। विधवा होने के कारण मन से वह टूट जाती है।

प्रस्तुत कहानी में निर्मला बेमेल विवाह की शिकार बनी महिला के रूप में चित्रित की गई है। अर्धेड उम्र के पति के मृत्यु के पश्चात वह टूट जाती है। अर्धेड उम्र के व्यक्ति को उसकी जो मनोदशा का सुंदर चित्रण मृणाल पाण्डे जी ने किया है। सफर करते समय गाड़ी के डिब्बे में एक दुल्हन के साथ अर्धेड व्यक्ति को देखकर वह सोचती है, "शायद दुहेजू हो या शायद बाप हो, स्टेशन छोड़ने आया हो, क्या पता? उसके पति को भी तो कई मर्तबा लोग उसका बाप समझ बैठते थे इसी से खिजलाकर वह और भी चुप्प, तल्लू होता गया था शायद। कुल तीन साल का साथ। अंधेरे से अंधेरे तक। साथ क्या सपना कहीं अब तो रुलाई भी नहीं आती सोचो तो वैसे सोचकर रोने जैसा था भी क्या ? ढिबरी से टिमटिमाते उजास की तरह वे साल।"9

'सुपारी फुआ' ग्रामीण जीवन से जुड़ी हुई अनोखी कहानी है। मृणाल जी ने प्रस्तुत कहानी में सुपारी फुआ का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। सुपारी फुआ बूढ़ी महिला है। वह विधवा है इसलिए ससुराल में उसकी हमेशा उपेक्षा की जाती है। निःसंतान होने के कारण वह टूट जाती है। वैधव्य जीवन की त्रासदी से उसका शरीर सुख जाता है, केवल प्राण ही शेष बचते हैं; किन्तु जब वह मायके आती है, तो काफी दिन तक जीवित रहती है। ग्रामीण संस्कृति में विवाह के बाद लड़कियों का मायके में अधिकार नहीं होता ऐसा माना जाता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत उदाहरण द्रष्टव्य है, "फुआ की माँ ने उनसे, जो भी उनका तब घरका नाम रहा होगा, लेकर उसी घड़ी कुछ ऐसा-सा कहा था कि लली, मायके की रोटी तोड़ती है, तो आँख-कान पर लगाम देकर इस चमड़े की जीभी पर तुझे पट्ट ताला जैसा डालना होगा"।¹⁰

'हिर्दा मेयों का मँझला' कहानी में मृणाल जी ने पहाड़ी जीवन की नारी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। कहानी में हिर्दा मेयो बाजार जाता है। गरीबी के दिनों में एक माँ के लिए बच्चों का पालन पोषण करता कितना मुश्किल होता है। यह हिर्दा मेयों की बोझू के कथन से स्पष्ट होता है। वह हिर्दा मेयों के मित्र से कहती है, "तुम देवर जैसे हुए अपने हुए तब तुमसे कह रही हूँ लला, जो स्वारथ परमारथ इस घर के बँटवारे का मैंने भोगा है, ईश्वर किसी को न दिखाये। गरीबी में लड़के पालना हथेली का माँस खाना ठहरा। थोड़ा रसवाली सब्जी और दूँ"।¹¹

निष्कर्ष :-

सामाजिक जीवन में परिवार, शिक्षा, जात-पात, छुआछूत, अंधविश्वास, शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार और परंपरागत रूढ़ियों का मनुष्य जीवन पर काफी असर होता है। भारत गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकांश जनता गाँवों में ही वास करती है। हिन्दी साहित्य के अधिकांश महिला लेखिका भारत के ग्रामीण क्षेत्रों से प्रभावित रही है। कहानी साहित्य, समय और समाज को उसकी समग्रता और वास्तविकता में ही पकड़ने का उपक्रम करता है। इस उपक्रम को मूर्तिमान करने में अनेक कहानीकारों ने अपना साहित्यिक योगदान दिया है। मृणाल पाण्डे भी उन्हीं कहानीकारों में से एक है। मृणाल पाण्डे ने अपने कहानी साहित्य में ग्राम्य तथा पहाड़ी जीवन की नारी समाज से जुड़ी हुई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं, पीड़ाओं, त्रासदियों, मनोव्यथाओं को उभारते हुए सामाजिक संकीर्णताओं की उपेक्षा करते हुए नारी जीवन को पूर्ण समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। व्यक्तिगत परिवेश से लेकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश का यथार्थ चित्रण उनके कहानी साहित्य की खास विशेषता रही है। नारी की कुण्ठा, अजनबीपन, साहसहीनता, द्वंद्व, आकांक्षाएँ और उनकी पूर्ति न होने का क्षोभ, असंगति, अन्तर्विरोध आदि न जाने कितनी मानसिक स्थितियों का चित्रण मृणाल जी ने 'चार दिन की जवानी तेरी', 'मुन्नूचा की अजीब कहानी', 'लड़कियों', 'बचुली चौकीदारिन कठी', 'हमसफर', 'सुपारी फुआ', 'हिर्दा मेयों का मँझला' आदि अपनी कहानियों में किया है। 'मुन्नूचा की अजीब कहानी' में ग्रामीण परिवेश की नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़का होने पर दाई को उपहार के रूप में कुछ न कुछ दिया जाता है। 'लड़कियाँ' कहानी में दाई का मनोवैज्ञानिक चित्रण इन शब्दों में मिलता है। 'सुपारी फुआ' कहानी में वृद्धा नारी की मनोदशा का चित्रण मिलता है। विधवा नन्द के प्रति भाभी के मन में चलने वाले कुत्सित विचारों का चित्रण 'हमसफर' कहानी में मिलता है। 'हिर्दा मेयों का मँझला' कहानी में मृणाल जी ने पहाड़ी जीवन की नारी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। संक्षेप में ग्रामीण महिला जिसे की खाना पकाना, पानी लाना, ईंधन बटोरना, खेतों तक भोजन पहुँचाना आदि कार्य उनके जिम्मे होता हैं। इस दृष्टि से मृणाल पाण्डे की कहानियों में ग्रामीण परिवेश की नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण दृष्टिगत होता है। नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं मनोवैज्ञानिक चित्रण करने में मृणालजी सफल हुई है।

संदर्भग्रंथ सूची :-

1. चार दिन की जवानी तेरी, मृणाल पाण्डे, पृ. 62
2. वही, पृ. 62
3. वही, पृ. 15
4. वही, पृ. 15
5. वही, पृ. 75
6. मृणाल पाण्डे का रचना संसार, अर्चना शुक्ला, पृ. 71
7. शब्दवेधी, मृणाल पाण्डे, पृ. 34, 35
8. एक स्त्री का विदागीत, मृणाल पाण्डे, पृ. 104
9. वही, पृ. 107
10. चार दिन की जवानी तेरी, मृणाल पाण्डे, पृ. 79
11. वही, पृ. 52, 53